

④ ②

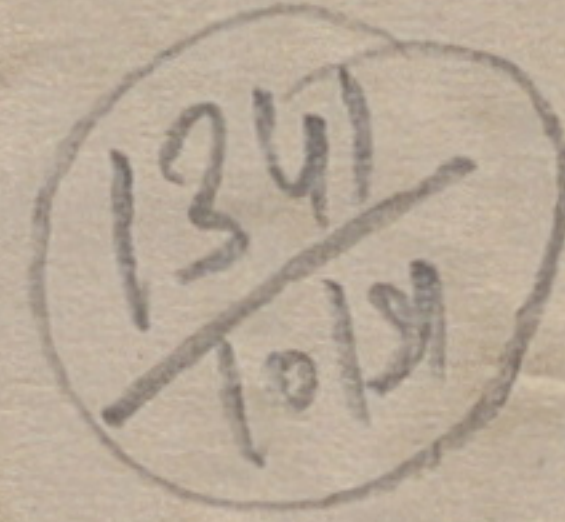
225

H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi



आह्वानांक Call No. _____

अवाप्ति सं० Acc. No. _____

225

②
1711

891.431
T32A4

५५

225

* श्री हरिः *

* वन्दे मातरम् *

अहिंसा की समशीर

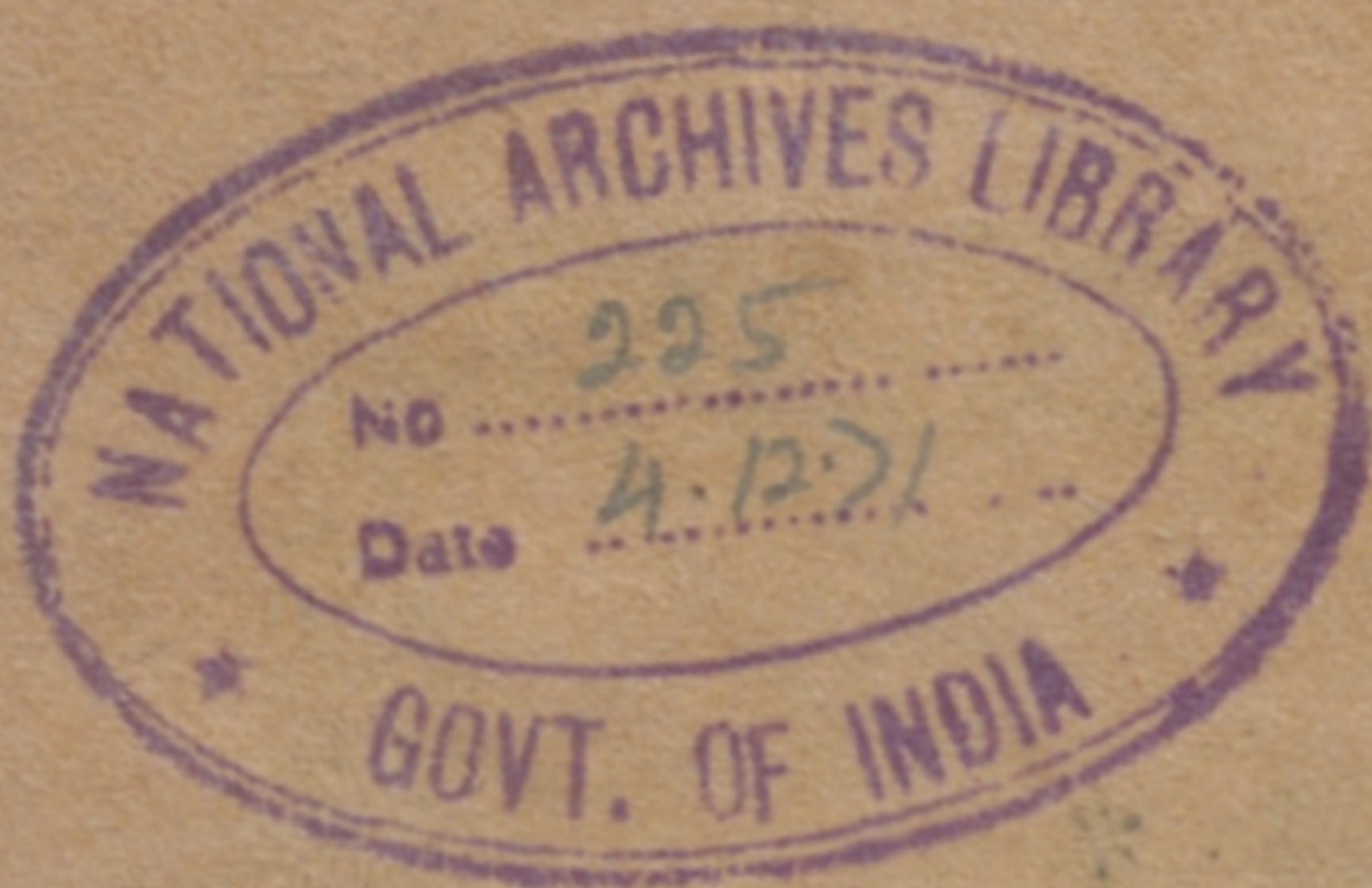


प्रकाशक तथा संग्रह कर्ता

ठाकुरप्रसाद मकरीखीह मिरजापुर

प्रथमवार ३०००] सन् १९३० ६० [मूल्य ॥ पैसा

खिचरी समाचार प्रेस, मिरजापुर।



24

श्री हरिः

अहिंसा की समशारि

गाना

जालिम की जुल्म को सब जल्दी मिटाएँगे ।
आजाद होगा भारत खुशियां मनाएँगे ॥
सोते ही सोते भाई सदिकां गुजर गईं ।
बेचेत सो रहे हैं उनको जगाएँगे ॥ जालिम० ॥
अहिंसा का तेज खन्जर है चक्र ये चरखा ।
बर्खा में बैठ कर के चर्खा चलाएँगे ॥ जालिम० ॥
देखेंगे सूत सुन्दर सब भूत भगेंगे ।
करघा से वस्त्र अच्छा जल्दी बिनाएँगे ॥ जालिम० ॥
सारी व धोती लुझी चद्दर बिनाय कर ।
फटने पर खूब अच्छी सुजनी सिलाएँगे ॥ जालिम० ॥
छाँछट कराड़ रुपया सालाना बचैगा ।
पानी की तरह पैसा नहीं अब बहाएँगे ॥ जालिम० ॥
'गान्धी' की बात मानों भूलो न भाइयों ।
'शंकर' स्वराज लेंगे झण्डा उड़ाएँगे ॥ जालिम० ॥

गजल

भारत के रोर जागो बदला है अब जमाना ।
 प्यारे वतन हो इस दम आजाद है बनाना ॥
 मत बुजदिली को हरगिज तुम पास दो फटकने ।
 आखिर तो दम अदम को होगा कभी खाना ॥
 शान्ति देवी के तुम जल्दी बनो उपासक ।
 निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना ॥
 हठ सत्य पर रहो तुम धारण करो अहिंसा ।
 आकर के जोश में तुम हुल्लड़ नहीं मचाना ॥
 माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित ।
 बालन्टियर बनो तुम अब छोड़ दो बहाना ॥
 दिलमें भिभक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ ।
 है स्वर्ग के बराबर इस वक्त जेलखाना ॥

—o—

गजल

जुझारे वीर भारत के अगर पानी पै आ जाते ।
 महत्मा गान्धी प्यारे जवाहिर हमसे हैं न्यारे ॥
 कलेजा तो फटा जाता मगर आंसू नहीं आते ।
 जुझारे वीर भारत के अगर पानी पै आ जाते ॥

हमारा धन हमारा बल हमारे प्राण प्यारे को ।
 न हमसे छीन पाते ये अगर पानी पै आ जाते ॥
 जुझारे वीर भारत के अगर पानी पै आ जाते ॥
 विचारे दीन भारत का दुलारा आंख का तारा ।
 जुदा हम से न कर पाते अगर पानी पै आ जाते ॥
 जुझारे वीर भारत के अगर पानी पै आ जाते ।
 सदा से हम फुसलते और गम खाते चले आते ॥
 मगर ये चाल पै अड़ते बिगड़ते ही चले जाते ।
 जुझारे वीर भारत के अगर पानी पै आ जाते ॥
 अहिंसा का पुजारी वो रहें हम हाथ मलमल कर ।
 नहीं तो हिन्द के काले जहर वाले न गम खाते ॥
 जुझारे वीर भारत के अगर पानी पै आ जाते ॥
 चखा दें मजा इनको न हमसे पार पाते ये ।
 हिला कर तख्त लन्दन का दिखा दें दिखा दें ॥
 जुझारे वीर भारत के अगर पानी पै आ जाते ॥

—०—

भण्डा ऊँचा रहे हमारा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा भण्डा ऊँचा रहे हमारा ।
 सदा शक्ति बरसाने वाला प्रेम—सुधा सरसाने वाला ।
 वीरों को हराने वाला मातृ—भूमि का तन मन सारा ॥

स्वतंत्रता के भीषण रण में लख कर बड़े जोश दण दण में
 कांपे शत्रु देख कर मन में मिट जावे भय संकट सारा ॥
 इस झण्डे के नीचे निर्भय लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय
 बोलो भारत माता की जय स्वतंत्रता ही ध्येय हमारा ॥
 आओ प्यारे वीरों ! आओ देश धर्म पर बलि बलि जोओ
 एक साथ सब मिल कर गाओ प्यारा भारत देश हमारा ॥
 इसकी शान न जाने पावे चाहे जान भले ही जोवे ।
 विश्व विजय कर के दिखलावे तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥
 झण्डा ऊँचा रहे हमारा ।

— ० —

रफ्तार

तबदील गवर्नमेण्टकी रफ्तार न होगी ।
 गर कौम असहयोग पै तैयार न होगी ॥
 बन जायँगे हर शहर में जलियान वाला बाग ।
 इस मुल्क से गर दूर यह सरकार न होगी ॥
 दुश्मन को असहयोग से हम ज़ोर करेंगे ।
 इन हाथों में बन्दूक औ तलवार न होगी ॥
 यह जेलखाने टूट कर अब और बनेंगे ।
 इनमें तमाम कौम गिरफ्तार न होगी ॥

वह कौन असीरे वतन होगी भला जिस पर ।

हंस हंस के फिदा जेल की दिवार न होगी ॥

सौदाई हैं हमको दो लोहे की बेड़ियां ।

सोने के जेवरों में यह झन्कार न होगी ॥

जब तक कि इसे खून से सोचेंगे नहीं हम ।

खेती वतन की दोस्तो तैयार न होगी ॥

हम ऐसी हुकूमत को मिटा देंगे मुजतरिब ।

गम में जो हमारे गमखवार न होगी ॥

—:~:—

दमन का दिवाला

दिवाला शीघ्र निकलेगा अरे थोथे दमन तेरा ।

खिजां से खूब उजड़ेगा अरे जालिम चमन तेरा ॥

सताले और थोड़े दिन सेवेदिल बेगुनाहों को ।

यहाँ से शीघ्र ही होगा अरे गर्वी गमन तेरा ॥

हमें लाचार कर तूने भुकाया खूग चरणों में ।

हमों बिपरीत अब इसके विलोकेंगे नमन तेरा ॥

अरे कायर निहत्थों को रेंगाया पेट के बल क्यों ?

लखेंगे शीघ्र ही हम भी अरे पापी पतन तेरा ॥

बहुत अब कर चुका शासन यहाँ से अब उठा आसन

हमारा देश है भारत, नहीं है यह वतन तेरा ॥

दबा ले और थोड़े दिन दमनकारी तू दुखियों को ।
 निहत्थे निर्बलों की आह से होगा निधन तेरा ॥
 दमन से रह नहीं सकता कभी भी यह अमन कायम
 करेगा यह दमन ही अन्त में निश्चय शमन तेरा ॥
 मिलेगी आत्म बल को जय दमन तेरे पशूवल पर ।
 चकित संसार देखेगा मिटेगा जब वतन तेरा ॥

—*—

गुलाम खाना

भारत न, रह सकेगा हर्गिज गुलामखाना ।

आजाद होगा होगा आता है वह जमाना ॥
 खूँ खौलने लगा है हिन्दुस्तानियों का ।

कर देंगे जालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना ।
 कौमी तिरंगे झण्डे पर जां निसार अपनी ।

हिन्दू, मसीह, मुसलिम गाते हैं यह तराना ॥
 अब भेड़ और बकरी, बन कर हम न रहेंगे ।

इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना ॥
 परवाह अब किसे है जेल औ दमन की प्यारी ।

एक खेल हो रहा है फांसी पर भूल जाना ॥
 भारत वतन हमारा भारत के हैं हम बच्चे ।

माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना ॥

जालिम तेरी तलवार

जालिम तेरी तलवार के डर से न डरेंगे ।
 हँस खेल खेल खेल से कुल जेल भरेंगे ॥
 चक्की चलावें शौक से मानिन्द रेल के ।
 छाती पे दुश्मनों के खूब दाल दलेंगे । जालिम०
 लुटेंगे ऐश जेल में बट बट के रस्सियाँ ।
 ऊसर उजाड़ भूमि को आवाद करेंगे ॥ जालिम०
 बाधेंगे ठाट टाट का विस्तर लंगा लगा ।
 फाके कशी करेंगे डरेंगे न मरेंगे ॥ जालिम०
 परवाह जान की नहीं हरगिज वसन्त को ।
 भेल हजार सख्तियाँ तिल भर न हटेंगे ॥ जालिम०

—*—

॥ इति ॥

